विचार बिन्दु

दूसरों पर शक करना कभी-कभी गुनाह हो जाता है। –कुरान

ऐसे मना प्रधानमंत्री मोदी का जन्मदिन!

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का 76वाँ जन्मदिन 17 सितंबर 2026 को पूरे देश में समारोह पूर्वक मनाया गया। इसके कुछ दिनों पूर्व, भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नबीन ने देशवासियों से अपील की थी कि देशवासी, प्रधानमंत्री के जन्मदिन के अवसर पर "आशीर्वाद का दीपक" जलाएं। इस अपील के दो पक्ष हैं, एक तो यह कि देश के नागरिक अपनी स्वेच्छा से प्रधानमंत्री को जन्मदिन की बधाई देने के लिए और उनके दीर्घायु होने की कामना के लिए अपने-अपने घरों में दिया जलाएं। भाजपा अध्यक्ष की अपील ऐसे समय में आई है जब देश विभिन्न प्रकार की त्रासदियों से हाल ही में गुजरा है। इनमें से कुछ निम्न हैं:–

बिहार, असम में भयंकर बाढ़ आई, जिसने लाखों का जीवन संकट में डाल दिया।

* NEET पेपर लीक कर कारण 21 छात्रों ने आत्महत्या कर ली

जंतर मंतर पर आंदोलनरत छात्रों पर दिल्ली पुलिस द्वारा बर्बरता पूर्ण तरीके से बल चार्ज किया गया, यहां तक कि उन पर पेलेट गन का इस्तेमाल भी किया गया। दिल्ली में अस्पताल में आग लगने से कई लोग जलकर मर गए।

दिल्ली के पी जी हॉस्टल "सत्य निकेतन" के ध्वस्त होने से छात्रों की असमय दर्दनाक मौत हो गई।

आम नागरिक के काम आने वाली उपभोक्ता वस्तुओं के दाम बहुत बढ़े हुए हैं।

बेरोजगारी की स्थिति अत्यंत विकट है ।

इस वर्ष की प्रथम तिमाही में 7.8 प्रतिशत जी डी पी वृद्धि के सरकारी दावे के बावजूद, वास्तविकता में देशवासियों में खुशी मनाने का कोई विशेष कारण नहीं दिखाई देता है। भारत सरकार के पूर्व वित्त सचिव सुभाष गर्ग ने महंगाई का समायोजन करने के बाद जी डी पी वृद्धि को शून्य बताया है। यह एक सामान्य बात है कि दीपक जलाने का मन तब ही करता है, जब परिवारों में खुशी का माहौल हो।

यह उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री मोदी ने स्वयं कई बार सार्वजनिक रूप से यह घोषणा की थी कि वे अपना जन्मदिन मनाना बिल्कुल पसंद नहीं करते हैं। उनके प्रधानमंत्री बनने के बाद, प्रारंभ के कुछ वर्षों में उन्होंने देश की सीमा पर जवानों के साथ अलग-अलग स्थानों पर अपना जन्मदिन सादे तरीके से मनाया था।

जब नरेंद्र मोदी ने जून, 2014 में प्रधानमंत्री पद सम्हाला था तो, सबको सक्रिय राजनीति से 75 साल की आयु में संन्यास लेने की बात कही थी। इसी आधार पर लालकृष्ण आडवाणी, मुरली मनोहर जोशी, यशवंत सिन्हा और अरुण शौरी जैसे दिग्गज भाजपा नेताओं को हाशिए पर धकेलते हुए इन लोगों को मार्गदर्शक मंडल में डाल दिया गया था। यह अलग बात है कि सरकार को 'मार्ग दर्शन' देने के लिए इस मार्गदर्शक मंडल की एक भी बैठक गत 12 वर्षों में नहीं हुई।

जब प्रधानमंत्री मोदी 17 सितंबर, 2025 को 75 वर्ष के होने वाले थे, उस समय ये अफवाहें जोर पकड़ने लगी थीं कि क्या वे अपने ही बनाए सिद्धांत पर चलते हुए प्रधानमंत्री पद से त्यागपत्र देते हुए सक्रिय राजनीति से अलग हो जाएंगे? जैसी कि संभावना थी, ऐसा कुछ नहीं हुआ। वे प्रधानमंत्री पद पर बने रहे और अब भी पूरी मजबूती से उस पद पर बने हुए हैं। हां, इस बीच अमित शाह और योगी आदित्यनाथ में से इनका उत्तराधिकारी कौन होगा, इस पर अनेक प्रकार के कयास लगते रहे।

खैर, भाजपा अध्यक्ष की अपील को एक तरह से आदेश मानते हुए भाजपा कार्यकर्ताओं ने अपने घरों, गांवों और शहरों में दीपक जलाकर प्रधानमंत्री मोदी को स्वस्थ और दीर्घायु होने का 'आशीर्वाद' दिया। देश के अनेक भागों, विशेषकर भाजपा शासित राज्यों में, करोड़ों दीपक जलाए गए। अगले दिन अनेक स्थानों पर दियों में बचे हुए तेल को गरीब बच्चों द्वारा बोतलों में इकट्ठा करने के अनेक दृश्य सामने आए, जिन्हें सोशल मीडिया पर बहुत चलाया गया। यह तेल उनके घरों में काम लेने के लिए ले जाया गया।

भाजपा कार्यकर्ताओं द्वारा मोदी को जन्मदिन की शुभकामनाएं देने के लिए नए नए तरीके अपनाए गए। कुछ कार्यकर्ताओं ने तो अलग दिखने की होड़ में, मोदी की तस्वीर पर माला चढ़ाकर, उस की आरती करना प्रारंभ कर दिया। ऐसा लग रहा था, जैसे वे जन्मदिन की बधाई के बजाए श्रद्धांजलि दे रहे हों। एक स्थान पर 125 करोड़ की लागत से मोदी का मंदिर बनाने की घोषणा की गई। इस मंदिर में नरेंद्र मोदी की मूर्ति स्थापित की जाएगी। यह समाचार, सोशल मीडिया पर बहुत वायरल हुआ।

जब नरेंद्र मोदी ने जून, 2014 में प्रधानमंत्री पद सम्हाला था तो, सबको सक्रिय राजनीति से 75 साल की आयु में संन्यास लेने की बात कही थी। इसी आधार पर लालकृष्ण आडवाणी, मुरली मनोहर जोशी, यशवंत सिन्हा और अरुण शौरी जैसे दिग्गज भाजपा नेताओं को हाशिए पर धकेलते हुए इन लोगों को मार्गदर्शक मंडल में डाल दिया गया था। यह अलग बात है कि सरकार को 'मार्ग दर्शन' देने के लिए इस मार्गदर्शक मंडल की एक भी बैठक गत 12 वर्षों में नहीं हुई।

प्रधानमंत्री के जन्मस्थान, गुजरात के वडनगर से वाराणसी तक और वाराणसी से वडनगर तक "सेवा संकल्प अभियान" के अंतर्गत दो मेगा मोटर साइकिल रैलियां भी चल रही हैं। इनमें कुल 500 मोटर साइकिल पर 1000 लोग भाग ले रहे हैं। इनके पेट्रोल पर जो व्यय होगा वह शायद सरकार द्वारा वहन किया जाएगा।

यह विडंबना ही है कि एक ओर तो प्रधानमंत्री विदेश मुद्रा बचाने के लिए नागरिकों से तेल का उपयोग कम करने की अपील कर रहे हैं, वहीं लाखों लीटर तेल "आशीर्वाद के दीपक" जलाने में व्यर्थ हो गया।

भाजपा शासित राज्यों के मुख्यमंत्रियों ने तो प्रधानमंत्री के जन्मदिन को "सेवा संकल्प अभियान" के रूप में एक माहर तक मनाने के आदेश जारी कर दिए। असम के मुख्यमंत्री ने सभी राशन कार्ड धारियों के लिए दीपक जलाना अनिवार्य कर दिया। दिल्ली के मुख्यमंत्री ने सी एम श्री योजना के अंतर्गत आने वाले 75 सरकारी विद्यालयों के बच्चों को शाम को 6 से 7 बजे तक दिए जलाने के लिए पाबंद किया। न केवल यह, उनके द्वारा जलाए गए दीपकों के फोटो और वीडियो बनाकर अपलोड करने के भी निर्देश जारी किए गए।

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री तो इनसे एक कदम आगे निकल गए और उन्होंने सभी सरकारी कार्यालयों, यहां तक कि सभी आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को आंगनबाड़ियों में प्रधानमंत्री मोदी के लिए "आशीर्वाद का दीपक" जलाकर उसके वीडियो सोशल मीडिया पर पोस्ट करने के आदेश जारी किए। इसी प्रकार के आदेश बिहार के मुख्यमंत्री ने भी जारी किए। इसी का लाभ उठाते हुए सी जे पी के अभिजीत दीपके भी दीपक जलाने हेतु एक गाँव के खंडहर नुमा सरकारी स्कूल पहुंच गए। इसका वीडियो सोशल मीडिया पर खूब चला।

कहा जा सकता है कि इस प्रकार की कार्यवाही से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का कोई लेना देना नहीं है। यह तर्क गले से उतरने वाला नहीं है क्योंकि भाजपा में बिना प्रधानमंत्री मोदी की इच्छा से कोई पत्ता भी नहीं खड़क सकता है। यदि प्रधानमंत्री इस बारे में पहले ही स्थिति स्पष्ट कर देते और अपनी नाराजगी व्यक्त कर देते कि वह अपने जन्मदिन पर इस प्रकार के किसी भी आयोजन के पक्षधर नहीं हैं, तो फिर संभव है किसी का इतना साहस नहीं होता कि इस प्रकार के आयोजन करता।

विडंबना तो यह है कि नरेंद्र मोदी के जन्मदिन का आयोजन सरकारी पैसे से किया गया। यह सर्व विदित है कि किसी के द्वारा सम्मान, अपने अच्छे कार्य व्यवहार से अर्जित किया जाता है न कि उसे पाने के लिए किसी को आदेशित किया जाता है (Respect is commanded and not demanded), जैसा कि इस बार सरकार ने आदेश जारी करके किया।

सरकारी आदेश जारी करने का अर्थ ही यह हुआ कि जो कोई इसकी पालना नहीं करेगा, वह दंड का भागी होगा। इस प्रकार का काम, उत्तरी कोरिया जैसे देश में तो संभव है, किंतु भारत जैसे विशाल लोकतांत्रिक देश में नहीं। भाजपा शासित राज्यों के मुख्यमंत्रियों द्वारा लिए गए इस चाटुकारिता पूर्ण कदम का क्या प्रभाव होगा, यह तो भविष्य में ही पता चलेगा।

भारतीय लोकतंत्र को व्यक्तिवाद से ऊपर उठना ही होगा। ऐसा नहीं है कि व्यक्ति पूजा का दौर नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद ही प्रारंभ हुआ है। पहले सोशल मीडिया नहीं था, इसलिए इस पर अधिक चर्चा नहीं होती थी। कांग्रेस के शासन काल में जब इन्दिरा गांधी प्रधानमंत्री थीं, तब कॉन्ग्रेस अध्यक्ष देव कांत बरुआ ने बयान दिया था कि "Indira is India and india is Indira" जब व्यक्ति को देश से बड़ा बना दिया जाता है तो लोकतंत्र का पतन प्रारंभ हो जाता है। आजकल फिर वही हो रहा है, जब मोदी को भगवान राम के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है, उनके मंदिर बनवाए जा रहे हैं और हनुमान चालीसा की तर्ज पर 'मोदी चालीसा' लिखी जा रही है।

आशा है, हमारे नेता इतिहास से सीख लेंगे और आत्म मुग्धता के मोह से बचेंगे। साथ ही, अपने अनुयायियों को भी ऐसा करने से रोकेंगे। आवश्यकता इस बात की है कि वे देश की मूल समस्याओं जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार पर पूरा ध्यान दें ताकि भारत 2047 तक विकसित देश बन सके। अन्यथा, देश का एक बहुत छोटा वर्ग तो अत्यंत अमीर हो जाएगा और शेष लोग, सरकारी राशन पर ही निर्भर रहेंगे और मूल भूत सुविधाओं से भी वंचित रहेंगे।

-अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

किशाऊ बांध परियोजना-भजनलाल सरकार की एक और उपलब्धि

प्रो. (डॉ.) पी. सी. कंठालिया

राजस्थान जैसे मरुस्थलीय और जल-संकट से जूझते राज्य के लिए पानी केवल विकास का साधन नहीं, बल्कि जीवन और भविष्य की सबसे बड़ी आवश्यकता है। ऐसे में यमुना जल समझौते के बाद किशाऊ बहुउद्देशीय बांध परियोजना को लेकर छह राज्यों के बीच हुआ ऐतिहासिक समझौता राजस्थान के लिए विशेष महत्व रखता है। 15 सितंबर 2026 को नई दिल्ली में राजस्थान, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश और दिल्ली के मुख्यमंत्रियों ने किशाऊ बहुउद्देशीय परियोजना के समझौते पर हस्ताक्षर किए। इस अवसर पर केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह तथा केंद्रीय जल शक्ति मंत्री सी. आर. पाटिल उपस्थित थे।

राजस्थान के लिए इस समझौते का सबसे बड़ा आकर्षण यह है कि किशाऊ परियोजना से124 मिलियन क्यूबिक मीटर (एमसीएम) पानी प्राप्त होगा। यह पानी मुख्यत: शेखावाटी क्षेत्र के सीकर, चूरू और झुंझुनूं जिलों की पेयजल आवश्यकताओं को पूरा करने में उपयोगी होगा एवं अधिशेष पानी सिंचाई में काम आयेगा । राजस्थान सरकार के अनुसार इस पानी को हरियाणा के हांसी क्षेत्र से चूरू तक तीन भूमिगत पाइपलाइनों के माध्यम से लाने की योजना है।

शेखावाटी लंबे समय से गंभीर जल संकट का सामना करता रहा है। भूजल का अत्यधिक दोहन, गिरता जलस्तर और खारेपन की समस्या ने सीकर, चूरू और झुंझुनूं के अनेक क्षेत्रों में पेयजल को बड़ी चुनौती बना दिया है। इसलिए किशाऊ का पानी केवल कुछ करोड़ घन मीटर पानी का आंकड़ा नहीं है, बल्कि लाखों लोगों के लिए दीर्घकालीन जल सुरक्षा की उम्मीद है।

तीन दशक पुराने समझौते से किशाऊ तक -किशाऊ परियोजना को समझने के लिए 1994 के यमुना जल समझौते को समझना आवश्यक है। 12 मई 1994 को यमुना बेसिन के तत्कालीन संबंधित राज्यों के बीच यमुना के सतही जल के बंटवारे को लेकर समझौता हुआ था। ऊपरी यमुना क्षेत्र में पर्याप्त भंडारण क्षमता नहीं होने के कारण मानसून के अतिरिक्त पानी को संठाहित करने के लिए तीन प्रमुख भंडारण परियोजनाओं की परिकल्पना की गई-यमुना पर लखवार, गिरी नदी पर रेणुकाजी और टौंस नदी पर किशाऊ।

किशाऊ परियोजना यमुना की प्रमुख सहायक नदी टौंस पर उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश की सीमा पर प्रस्तावित है। वर्तमान समझौते के अनुसार यहां 232.6 मीटर ऊंचा कंक्रीट ग्रेविटी बांध बनाया जाएगा। परियोजना की जल भंडारण क्षमता लगभग 1,562 एमसीएम बताई गई है। इससे लगभग 97,000 हेक्टेयर भूमि में सिंचाई की सुविधा तथा लगभग 1,476 मिलियन यूनिट स्वच्छ जल विद्युत उत्पादन की संभावना है।

हालांकि परियोजना का स्वरूप और आंकड़े समय-समय पर संशोधित होते रहे हैं। पर्यावरणीय मूल्यांकन से जुड़े दस्तावेजों में 1,786 एमसीएम कुल भंडारण तथा 1,324 एमसीएम उपयोगी जल और 422 मेगावाट की वर्तमान परियोजना संरचना का उल्लेख मिलता है। इसलिए अंतिम स्वीकृत परियोजना के आंकड़ों को ही निर्माण के समय आधार माना जाना चाहिए।

आठ साल का गतिरोध कैसे टूटा?

किशाऊ परियोजना नई नहीं है। यह दशकों से कागजों और बैठकों में घूमती रही है। मुख्य समस्या लागत, पानी के बंटवारे, बिजली के लाभ तथा हिमाचल और उत्तराखंड में होने वाले विस्थापन और पर्यावरणीय प्रभावों को लेकर थी।

हिमाचल प्रदेश के सामने विशेष समस्या यह थी कि बांध उसके क्षेत्र में बनना है, भूमि डूबेगी, लोगों का विस्थापन होगा और पर्यावरणीय एवं पुनर्वास संबंधी लागत भी उठानी पड़ेगी, जबकि परियोजना के पानी का बड़ा लाभ नीचे के राज्यों को मिलेगा। परियोजना से जुड़े दस्तावेजों में लगभग 2,950 हेक्टेयर भूमि की आवश्यकता का उल्लेख है। वित्तीय विवाद को दूर करने में केंद्र सरकार की भूमिका निर्णायक रही। जून 2026 में सहमति बनी कि परियोजना के जल घटक की 90 प्रतिशत लागत केंद्र सरकार केंद्रीय सहायता के रूप में वहन करेगी, जबकि शेष 10 प्रतिशत छह भागीदार राज्यों द्वारा वहन किया जाएगा।

सबसे महत्वपूर्ण समाधान हिमाचल प्रदेश के विद्युत घटक को लेकर निकला। हिमाचल के हिस्से की बिजली लागत से संबंधित वित्तीय दायित्व को दिल्ली और राजस्थान द्वारा75:25 के अनुपात में वहन करने पर सहमति बनी। इसके बदले हिमाचल प्रदेश के आवंटित जल का 95 प्रतिशत दिल्ली और राजस्थान को उपलब्ध कराने की व्यवस्था की गई, जबकि हिमाचल अपने लिए 5 प्रतिशत रखेगा। 95 प्रतिशत हिस्से में दिल्ली का हिस्सा 75 प्रतिशत और राजस्थान का 25 प्रतिशत होगा।

यही वह समझौता है जिसने वर्षों से अटकी परियोजना के सामने खड़ी सबसे बड़ी वित्तीय बाधाओं में से एक को दूर किया।

राजस्थान के लिए 124 एमसीएम का महत्व-राजस्थान को मिलने वाला 124 एमसीएम पानी मात्रा में भले ही पूरे राज्य की आवश्यकताओं की तुलना में छोटा दिखाई दे, लेकिन शेखावाटी के लिए इसका महत्व बहुत बड़ा है। चूरू, झुंझुनूं और सीकर जैसे जिलों में पेयजल की उपलब्धता को लेकर वर्षों से चिंता रही है। यदि निर्धारित पाइपलाइन परियोजना समयबद्ध ढंग से पूरी होती है, तो यह क्षेत्र भूजल पर निर्भरता कम करने की दिशा में आगे बढ़ सकता है।

यह भी उल्लेखनीय है कि 1994 के यमुना जल समझौते में राजस्थान के हिस्से का पानी निर्धारित किया गया था, लेकिन आवश्यक जल-परिवहन ढांचे के अभाव में उसका पूरा उपयोग लंबे समय तक नहीं हो पाया। अब यमुना जल परियोजना और किशाऊ परियोजना को जोड़कर राजस्थान अपने हिस्से के पानी को शेखावाटी तक पहुंचाने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। राजस्थान के लिए यह केवल नई परियोजना नहीं, बल्कि पुराने जल-अधिकार को व्यवहारिक रूप से उपयोग में लाने की प्रक्रिया भी है।

भजन लाल सरकार के लिए महत्वपूर्ण उपलब्धि - राजस्थान के मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा ने किशाऊ समझौते पर स्वयं हस्ताक्षर किए। इससे पहले जून 2026 में राजस्थान और हरियाणा के बीच यमुना जल परियोजना के निर्माण एवं क्रियान्वयन को लेकर भी महत्वपूर्ण समझौता हुआ था।

इस क्रम को देखा जाए तो राजस्थान में जल उपलब्धता के मोर्चे पर यमुना जल परियोजना और किशाऊ समझौते का विशेष महत्व है। राज्य के लिए रामजल सेतु लिंक तथा नर्मदा से संबंधित जल उपलब्धता के प्रयासों के साथ इन्हें जोड़कर देखा जा सकता है। हालांकि प्रत्येक परियोजना की प्रकृति, जल स्त्रोत, लाभार्थी क्षेत्र और कार्यान्वयन व्यवस्था अलग-अलग है, इसलिए इन्हें एक ही परियोजना का हिस्सा समझना उचित नहीं होगा। किशाऊ समझौते की सबसे बड़ी उपलब्धि यही है कि राजस्थान ने शेखावाटी के लिए एक अतिरिक्त और अपेक्षाकृत स्थायी जल स्त्रोत की दिशा में ठोस कदम बढ़ाया है। लेकिन उपलब्धि का वास्तविक मूल्य तभी सामने आएगा जब पानी धरातल पर पहुंचेगा।

समझौते के बाद असली चुनौती -समझौते पर हस्ताक्षर होना महत्वपूर्ण पड़ाव है, लेकिन यह परियोजना का अंतिम चरण नहीं है। अब विस्तृत परियोजना रिपोर्ट, पर्यावरणीय एवं वन संबंधी स्वीकृतियां, पुनर्वास, भूमि संबंधी प्रक्रियाएं, वित्तीय व्यवस्था और अंततः निर्माण जैसे अनेक चरण पूरे करने होंगे। जून में केंद्र ने स्पष्ट किया था कि राज्यों की सहमति के बाद परियोजना को केंद्रीय मंत्रिमंडल के अनुमोदन के लिए रखा जाएगा।

इसलिए सरकार को अब केवल समझौते का श्रेय लेने तक सीमित नहीं रहना चाहिए। राजस्थान की जनता को यह जानने का अधिकार है कि 124 एमसीएम पानी वास्तव में कब तक शेखावाटी पहुंचेगा, तीन भूमिगत पाइपलाइनों का निर्माण कब शुरू होगा, उसकी लागत कितनी होगी और परियोजना की समयसीमा क्या होगी।

साथ ही, हिमालयी क्षेत्र में इतनी बड़ी परियोजना के पर्यावरणीय और सामाजिक प्रभावों को भी गंभीरता से लेना होगा। जिन परिवारों की भूमि और गांव जलाशय क्षेत्र में आएंगे, उनका पुनर्वास सम्मानजनक और पारदर्शी तरीके से होना चाहिए। विकास का लाभ तभी टिकाऊ माना जाएगा जब उससे प्रभावित लोगों के हितों की भी पर्याप्त रक्षा हो।

किशाऊ परियोजना केवल एक बांध नहीं है। यह छह राज्यों के बीच सहयोग, जल-साझेदारी और लंबे समय से चले आ रहे विवादों को संवाद से सुलझाने का उदाहरण है। परियोजना पूरी होने पर इससे पेयजल, सिंचाई, जलविद्युत और यमुना के प्रवाह-चारों क्षेत्रों में लाभ मिलने की संभावना है। केंद्र सरकार के अनुसार इससे यमुना में अधिक नियंत्रित जल प्रवाह और नदी के पुनर्जीवन के प्रयासों को भी बल मिलेगा।

राजस्थान के लिए इसका सबसे महत्वपूर्ण संदेश स्पष्ट है-पानी के बिना विकास की कल्पना अधूरी है और शेखावाटी के लिए किशाऊ का 124 एमसीएम पानी भविष्य की जल सुरक्षा का महत्वपूर्ण आधार बन सकता है। मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा की सरकार के लिए यह निश्चित रूप से एक महत्वपूर्ण जल उपलब्धि है, लेकिन इस उपलब्धि की अंतिम कसौटी समझौते पर हस्ताक्षर नहीं, बल्कि शेखावाटी के घरों तक समय पर पानी पहुंचना होगी।

-प्रो. (डॉ.) पी. सी. कंठालिया, मुख्य वैज्ञानिक, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि, उदयपुर

पेड़ों की रक्षार्थ प्राणों की आहुति देने वाले 363 शहीदों की याद में खेजड़ली में मेला भरा

विश्नोई समाज के लोगों एवं पर्यावरण प्रेमियों ने खेजड़ली के शहीदों को श्रद्धांजलि दी

■ **शहीदों की याद में पर्यावरण प्रेमियों द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया और हरियालो राजस्थान के तहत पौधारोपण गया गया**

जोधपुर, (कासं)। पेड़ों की रक्षार्थ 296 साल पहले जोधपुर से 28 किमी दूर खेजड़ली में प्राणोत्सर्ग करने वाले 363 शहीदों की स्मृति में सोमवार को मेले का आयोजन किया गया। मेले में देशभर से आए विश्नोई समाज के लोगों एवं पर्यावरण प्रेमियों ने 363 लोगों की याद में बने शहीदी स्मारक पर शीश नवाया व पर्यावरण संरक्षण के लिए हवन में आहुतियां प्रदान की।

खेजड़ली राष्ट्रीय पर्यावरण संस्थान के अध्यक्ष मलखान सिंह बिश्नोई ने बताया कि सुबह रुड़कली महंत शिवदास, खेजड़ली महंत एवं लालासर साथरी महंत कथावाचक स्वामी सच्चिदानन्द आचार्य सहित अन्य संतों के सानिध्य में गुरु जम्भेश्वर शब्दवाणी व वैदिक मंत्रोच्चार से हवन किया गया। घी, खोपरा व हवन सामग्री से मेले में पूरे दिन हजारों लोगों ने आहुतियां देकर अपने प्रकृति रक्षार्थ 363 अमर बलिदानियों को याद किया और पर्यावरण संरक्षण का संकल्प दोहराया। यहां विश्नोई धर्मगुरुओं के सानिध्य में गुरु जम्भेश्वर की 120 शब्द की वाणी व वैदिक मंत्रोच्चार से हवन के बाद शहीदी स्थल पर ध्वजारोहण कर मेले की शुरुआत की गई। यहां पर्यावरण रक्षार्थ विष्णु हवन कुंड में आहुतियां व परिक्रमा कर अमर शहीदों को श्रद्धासुमन अर्पित किए गए। साथ ही खेजड़ली परिसर में नवनिर्मित जम्भेश्वर मंदिर में पर्यावरण प्रेमियों ने परिक्रमा देकर गुरु जंभेश्वर के बताए मार्ग व 29 नियमों की आचार संहिता पर चलने का संकल्प लिया। इसके साथ ही यहां पर्यावरण सभा का आयोजन किया गया जहां पर्यावरण व वन्यजीव संरक्षण के साथ सामाजिक व शिक्षा क्षेत्र में सक्रिय लोगों को सम्मानित भी किया गया।

बिश्नोई टाईगर्स वन्य एवं पर्यावरण संस्थान बिश्नोई टाईगर फोर्स के प्रदेश अध्यक्ष रामपाल भवाद ने बताया कि हरे वृक्ष रक्षार्थ 363 अमर शहीदों की याद में पर्यावरण प्रेमियों द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इसमें रक्तदान करके हरियालोराजस्थान के तहत पौधारोपण गया। शिविर के मंच पर सभी रक्तदाताओं को स्मृति चिन्ह एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया। मेले में दूर-दूर से पर्यावरणविद् सहित बड़ी संख्या में लोग पहुंचे और शहीदों के स्मारक पर सामूहिक पर्यावरण यज्ञ में आहुति देकर श्रद्धांजलि दी।

डॉ. सूरजसिंह नेगी और निहाल सिंह लांबा सम्मानित

जयपुर/चूरू। डॉ.ओ.पी. शर्मा चैरिटेबल ट्रस्ट, चूरू की ओर से रविवार को दादू भवन चूरू में आयोजित सम्मान समारोह में जयपुर के साहित्यकार डॉ. सूरज सिंह नेगी को मनुज साहित्य-सम्मान और चूरू के पर्यावरणविद् निहाल सिंह लांबा को सावित्री देवी सेवा सम्मान अर्पित किया गया। सम्मान स्वरूप दोनों को माला, शाल, श्रीफल, सम्मान पत्र, स्मृति चिह्न एवं ग्यारह हजार रुपये भेंट किये गये।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए लोहिया महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. मंजु शर्मा ने सदन का आव्हान किया कि हमें अपने स्वर्गीय अभिभावकों की स्मृति को सुरक्षित रखते हुए भारत के सांस्कृतिक मूल्यों का आदर करना चाहिए। उनका कहना था कि साहित्य और पर्यावरण में गहरा अन्तर्सम्बन्ध है। जिस व्यक्ति ने इस अन्तर्सम्बन्ध को समझ लिया, वह व्यक्ति निश्चित रूप से सामाजिक कल्याण के पथ पर ही आगे बढ़ेगा। सम्मानित साहित्यकार डॉ. सूरजसिंह नेगी ने अपने सम्मान के प्रत्युत्तर में कहा कि स्वार्थ की प्रवृत्ति के चलते आधुनिक भारतीय समाज में व्यक्ति केवल अपने तक सिमटता जा रहा है और इससे हमारे सनातन परिवार-तन्त्र को गहरी क्षति हुई है। यदि लेखक सावचेत होकर लिखे, तो समाज का परिदृश्य बदल भी सकता है। उन्होंने कहा कि चिट्ठी-पत्री का युग फिर लौटना चाहिए, ताकि संवादहीनता टूटे और लोगों में आपसी विश्वास कायम हो।

सम्मान समारोह में जयपुर के साहित्यकार डॉ. सूरज सिंह नेगी को मनुज साहित्य-सम्मान और चूरू के पर्यावरणविद् निहाल सिंह लांबा को सावित्री देवी सेवा सम्मान मिला।

सम्मानित पर्यावरण सेवक निहालसिंह लांबा का कहना था कि यदि इरादा पक्का हो, तो चूरू जैसे विपरीत जलवायु के क्षेत्र में भी हम न केवल लाखों पेड़ लगा सकते हैं, बल्कि उन्हें जिंदा भी रख सकते हैं।

उनका कहना था कि प्रकृति की सेवा करने के लिए धन की अधिक जरूरत नहीं होती, बल्कि इसके लिए मनुष्य को अपने मन में जिममेदारी का बोध जाग्रत करना पड़ता है। सम्मान्य द्वय के जीवन साथियों डॉ. मीना सिरोला और कुलदीप लांबा का भी अभिनंदन किया गया। साहित्यकार स्नेहलता शर्मा ने स्वागत उद्बोधन दिया। प्रबन्धन ट्रस्टी डॉ. सुरेन्द्र शर्मा, कृष्ण कुमार ग्रोवर, एडवोकेट सुरेश शर्मा, प्रोफेसर सुरेन्द्र सोनी, मोहनलाल त्रिवेदी, सुधाकर सहल, श्यामसुंदर शर्मा, विनोद मेहता, जितेन्द्र मेहता, रवीन्द्र शर्मा, राजेन्द्र मुसाफ़िर, ओमप्रकाश तंवर, अजय शर्मा, जगदीश शर्मा, सज्जन कुमार लाटा आदि ने अतिथियों का स्वागत-अभिनन्दन किया। डॉ. प्रमोद बाजोरिया ने काव्य के माध्यम से विचार व्यक्त किये। उपस्थित समस्त का आभार ज्ञापित करते हुए डॉ. सुरेन्द्र शर्मा ने कहा कि समाज के रुचिशील व्यक्तियों के सहयोग से उत्साहवर्धन के साथ सफलता सुनिश्चित होती है।

मंच संचालन साहित्यकार और विचारक प्रोफेसर कमलसिंह कोठारी ने किया। संस्था के सचिव राजेन्द्र शर्मा मुसाफ़िर ने बताया कि इस अवसर पर ऊषा शर्मा, अनसुईया शर्मा, पुष्पा शर्मा, आनंदबाला, लाजवंती मुद्गल, बनवारीलाल खामोश, अनन्तराम सोनी, बाबूलाल शर्मा, गुरुदास भारती, हरिसिंह, बाबूलाल शर्मा, विजयकान्त, मेघराज ढाका, सोमेश शर्मा, सज्जन लाटा, इदरीस 'राज', प्रो. के.सी.सोनी, मोहनलाल अर्जुन, दीपक कामिल सहित अनेक लेखक, पत्रकार, कवि और प्रबुद्ध लोग उपस्थित थे।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

मंगलवार 22 सितम्बर, 2026

भाद्रपद मास, शुक्ल पक्ष, एकादशी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत-2083, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र प्रात: 7:07 तक, अतिगंड योग सायं 4:29 तक, वणिज करण प्रात: 8:52 तक, चन्द्रमा आज मकर राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-मकर, मंगल-कर्क, बुध-कन्या, गुरू-कर्क, शुक्र-तुला, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज रवियोग प्रात: 7:07 तक है। कुमार योग प्रात: 7:07 से रात्रि 9:44 तक है। भद्रा प्रात: 8:52 से रात्रि 9:44 तक है। आज सायन तुला में सूर्य प्रवेश बुधवार प्रात: 5:36 पर करेगा। आज पदमा एकादशी व्रत, जल झूलनी एकादशी व्रत, परिवर्तिनी एकादशी डोल ग्यारस पर्व है।

श्रेष्ठ चौघड़िया- चर 9:20 से 10:48 तक, लाभ अमृत 10:49 से 1:50 तक, शुभ 3:20 से 4:50 तक।

राहुकाल- 3:00 से 4:30 तक, सूर्योदय 6:19, सूर्यास्त 6:20

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। धन हानि का भय बना रहेगा।

कर्क
परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

सिंह
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कन्या
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में सफलता से मनोबल बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। घर-परिवार में सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी।

तुला
घर-परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है।

धनु
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे।

मकर
मानसिक तनाव मन: स्थिति में सुधार होगा। आज आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। मन में असंतोष बना रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

मीन
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। अटका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।